

नए संकल्पों का साल

सामान्य अर्थों में देखें तो समय साल-दर-साल अपनी चाल चलता रहता है। नया साल समय का एक मानक है। साल कोई अच्छा-बुरा नहीं होता, परिस्थितियां उसकी दशा-दिशा तय करती हैं। यह हम पर निर्भर करता है कि समय के इस मानक को हम किस तरह बेहतर बनाते हैं। यह विभिन्न संयोग ही कि नया साल रक्त जमाती सर्दी के बीच दस्तक देता है। खासकर, पश्चिमी देशों में तो बर्फ सामान्य जन-जीवन को जमा देती है। वातावरण में एक उदासी सी होती है। संभवतः जीवन की इसी एकरसता को तोड़ने के लिये ही नया साल मनाने की परंपरा शुरू हुई होगी। ताकि सर्दी को अंगूठा दिखाकर सार्वजनिक जीवन में उत्सव व उल्लास का मौसम बने। जहां तक भारतीय नववर्ष का आगमन है, वह उस समय आता है जब कुदरत मुस्करा रही होती है। सर्दी की विदाई की बेला, और प्रीष्ठा ऋतु दस्तक दे रही होती है। वृक्षों पर फैल-फूल व खेतों में नई फसल पकने की तैयारी होती है। बहरहाल, उत्सव कैसे भी हों हमें उल्लासित करते हैं, हमारे जीवन की एकरसता को तोड़ते हैं। नये उत्साह का संचार करते हैं लेकिन नये साल का उत्सव हमें अराजक व्यवहार का लाइसेंस नहीं देता। सड़कों पर नशे में झुमे और तेज गति से बाहन चलाने का लाइसेंस नहीं देता। एक व्यक्ति की आजादी किसी की आजादी का अतिक्रमण करने का अधिकार नहीं देती। विडंबना है कि नई पीढ़ी तरह-तरह के नशों में डूबकर नये साल का उच्छ्वरुल जशन मनाने को बेताब नजर आती है। उनसे सवाल किया जाना चाहिए कि देर रात तक हुड़दिंग के बाद जब वे देर से एक अलसायी सुबह के साथ उठते हैं तो क्या ऐसे नये साल का स्वागत करते हैं? बहरहाल, हमने वर्ष 2024 में कदम रखा लिया है। यह साल देश में आम चुनावों का साल है। यह लोकतंत्र के महाकूंभ का वर्ष है। बताएं जिम्मेदार नागरिक हमें तटस्थ भाव से संकीर्णताओं की राजनीति करने वालों को खुली छूट नहीं देनी है कि वे भारतीय लोकतंत्र में सामाजिक समरता व धर्मनिपेक्षता का अतिक्रमण करें। भारत विभिन्न संस्कृतियों व धर्मों का गुलदस्ता है। इसमें बहुमुख्यक वर्ग के भी अपने विशिष्ट दायित्व हैं। सत्ताधीशों को भी धार्मिक मामलों से तटस्थता व सुरक्षित दूरी रखनी चाहिए। राजनेताओं को विशुद्ध राजनीति करनी चाहिए व धर्मगुरुओं को धार्मिक क्रियाकलाप। दरअसल, कोई भी लोकतंत्र सहिष्णुता, सद्व्यवहार व विश्वावधुत्व के आधारभूत तत्वों से ही समृद्ध होता है। विडंबना यह कि देश का बड़ा वर्ग अपने लोकतात्रिक अधिकारों व अपनी मतदान की शक्ति से अनभिज्ञ नजर आता है। वह तमाम संकीर्णताओं व प्रलोभनों की राजनीति का शिकार हो जाता है। दरअसल, लोकतंत्र की शुचिता व भविष्य उसके जिम्मेदार नागरिकों के व्यवहार पर निर्भर करता है। देश के युवाओं के कंधों पर इस लोकतंत्र की अस्मिता की रक्षा का दायित्व है। उह लोकतंत्र के महाकूंभ को गंभीरता से लेते हुए न केवल अपने मताधिकार का प्रयोग करना है बल्कि स्वस्थ जनमत बनाने में भी अपना योगदान देना है।

बड़े पूंजीपतियों के प्रति मोदी सरकार की उदारता के परिणामस्वरूप, आय और धन 3 असमानताएं नई ऊंचाइयों पर पहुंच गयीं। जनवरी 2023 में जारी ऑक्सफैम रिपोर्ट के अनुसार, सबसे अमीर 1 प्रतिशत के पास 40 प्रतिशत से अधिक संपत्ति है। देश का दसवां हिस्सा, बाबकि नीचे की आधी आबादी के पास कुल संपत्ति का केवल 3 प्रतिशत हिस्सा है। 2023 में मन के उपकरणों को तेज किया गया और विपक्ष को निशाना बनाने के लिए केंद्रीय एजेंसियों का व्यापक उपयोग भी देखा गया। प्रवर्तन निदेशालय, केंद्रीय नांच व्यूरो और आयकर विभाग की छापमारी और गिरफ्तारियां सत्तारुद्ध दल के हाथों में खतरनाक हथियार बन गयी हैं। संसद के शीतकालीन सत्र के अंत में, विपक्ष की उपरिथिति के बिना, तीन नये आपराधिक अनुनून विधेयक पारित किये गये ऐसा माना जा रहा था कि यह उपनिवेशवाद की विरासत को बहत कर रहा है, जबकि वास्तव में, यह पुनरु उपनिवेशीकरण का एक रूप था। नये आपराधिक कानूनों में कई प्रावधान हैं जो नागरिकों की बुनियादी सुरक्षा को खत्म करते हैं और एक पुलिस राज्य की स्थापना करते हैं। मजदूर वर्ग और किसान सांप्रदायिक-गॉर्पेरेट शासन के खिलाफ संघर्ष कर रहे हैं।

अन्याय

पी. सुधीर

वर्ष 2023 का अंत गाजा
इजरायली युद्ध-मशीन द्वारा
फिलिस्तीनियों के नरसंहार की कात्ता
आया के साथ होगा। इजरायल व
लगभग तीन महीने की क्रू
आक्रामकता के कारण (26 दिसंबर
तक) गाजा में 20,915 लोग मरे
गये, जिनमें से 8,000 से अधिक
बच्चे हैं। अन्य 53,918 लोग घायल
हुए हैं और बेहिसाब संख्या में लोग
अभी भी बमबारी वाली झारतों के
मलबे में ढंडे हुए हैं। फिलिस्तीनियों पर
इजराइल के युद्ध को पूरी तरह
संयुक्त राज्य अमेरिका का समर्थन
प्राप्त है जिसने 7 अक्टूबर को संघर्ष
शुरू होने के बाद से इजराइल व
अधिक घातक हथियार और उपकरण
भेजे हैं। अमेरिका संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा
परिषद में ऐसे प्रस्तावों पर वीटो करने
तकाल युद्धविराम के किसी विभाग
को रोक रहा है।

हालांकि अमेरिकी प्रशासन व
इजरायल के लिए कट्टर समर्थन के
आश्वर्य की बात नहीं है, लेकिन ज
तक भारत का सवाल है, वह नहीं
बात इजरायल के कार्यों के लिए पूरी
समर्थन की मोदी सरकार की घोषणा
है जो भारत का इजरायल के पक्ष
बड़ा बदलाव है। भारत अक्टूबर
संयुक्त राष्ट्र महासभा में युद्धविराम त
आह्वान वाले प्रस्ताव का समर्थन करने
से इनकार करने की हद तक चतुर
गया। युद्धविराम के प्रस्ताव पर दिसंबर
में आगे समाजिक समाज में ऐसी



पहली बार, केंद्रीय ट्रेड यूनियनों और मजदूर वर्ग और किसान आंदोलनों का प्रतिनिधित्व करने वाले संयुक्त किसान मोर्चा ने सिंतंबर में एक संयुक्त सम्मेलन आयोजित किया और नवंबर में तीन दिवसीय महापड़ाव का एकनुष्ठान आयोजित किया। इस संयुक्त विरोध कार्यवाही से पहले देश के विभिन्न हिस्सों में श्रमिकों और किसानों के विभिन्न वर्गों के कई संग्रह हुए थे। इस वर्ष मेहनतकश जनक के और अधिक वर्ग भाजपा सरकार की नव-उदारवादी नीतियों के खिलाफ सामने आये। 2024 के उत्तराधि में विपक्षी दलों ने एक साथ आकर 28 पार्टियों वाला इंडिया रूप बनाया। विपक्षी गठबंधन का उद्देश्य 3 अप्रैल-5 मई, 2024 में होने वाले आम चुनावों में भाजपा के खिलाफ एक जनलड़ाई लड़ना है। यह लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और संघवाद - संविधान की सभी बुनियादी विशेषताओं की रक्षा के लिए लड़ाई होगी। नया साल 2024 इस महान युद्ध का गवाह बनेगा।

विचार

न्यायपूर्ण समाज का निर्माण हो नववर्ष का संकल्प

۲۳

भारत आज की तारीख में जिस मुकाम पर खड़ा है, साफहै कि 2024 कुछ ऐसे घटनाक्रम लेकर आ रहा है जिनका दूरगामी परिणाम पड़ना तयार है। इस परिप्रेक्ष्य में कम से कम तीन भावी परिघटनाओं की शिनाख्त तो हो ही सकती है- 14 जनवरी से प्रारम्भ होने जा रही राहुल गांधी की भारत न्याय यात्रा, 22 जनवरी को अयोध्या में श्रीराम मंदिर का उद्घाटन और उसके बाद लोकसभा का चुनाव, जिसके बारे में कुछ लोगों का अनुमान है कि उसे राम मंदिर के उद्घाटन के तुरन्त बाद भी कराया जा सकता है। अगर आम चुनाव मध्यावधि न होकर अपने वक्त पर होता है तो अप्रैल के आसपास होगा। जब भी हो, उसका महत्व तो सर्वाधिक है और पहले हो चुके होंगे दोनों आयोजनों का असर उस पर होगा- सामर्मांदिर व न्याय यात्रा का।

का कमतर करके नहीं आका सकता। हर वर्ष का अपना मह

हे
मुश्कल में दिखत ह। दूसरा तरफ कांग्रेस के नेतृत्व में संयुक्त प्रतिपक्ष शिंडियाश लगातार मजबूत हो रहा है। तीन राज्यों में पराजय के बाद भी कांग्रेस सिरमौर है। वे सारी आशंकाएं कम से कम अब तक तो गलत साबित हुई हैं जो इस आशय की थीं कि गठबन्धन में एकजुटता कायम नहीं रह पायेगी। विपक्षी गंजोड़ नेतृत्व, सीटों के बंटवारे, साझा कार्यक्रम आदि के सम्बन्ध में कहीं भी असमंजस में नहीं दिखता। इस गठबन्धन में शामिल सभी 28 दल एकजुट हैं और अब तक के संकेत यही बतला रहे हैं कि वे एक साथ मिलकर चुनाव लड़ें। 2022 सितम्बर, 2022 को कन्याकुमारी से निकलकर 30 जनवरी, 2023 को श्रीनगर में तिरंगा झंडा फहारने के साथ एक अभूतपूर्व यात्रा राहुल ने अपने नाम पर दर्ज की थी, अब उसके सीफल के रूप में 14 जनवरी को जो यात्रा निकल रही है वह मोदी प्रदत्त आर्थिक विषमता, राजनीतिक शक्तियों के केन्द्रीकरण और सामाजिक ध्वनीकरण के खिलाफ है। राहुल गांधी, उनकी पार्टी और गठबन्धन के अन्य सहयोगी दल जिस प्रकार से सामाजिक न्याय के नारे को उठाये हुए हैं, उससे प्रतीत होता है कि लोकसभा-2024 भावनात्मक मुद्दा (ध्वनीकरण-साप्ताहायिकता) बनाम सामाजिक न्याय होने जा रहा है।

ਭਾ਷ ਮਿ ਬਹੁਤ ਰਹਿਗਾ ਆਧਿਕਾ

आर्थिक आयात की विनाया गई रेट वर्ष 2023 की और नए वर्ष 2024 की बनाओं पर प्रकाशित रिपोर्ट में नए वर्ष में विकास की ऊँची की जा रही है। यदि 4 की डगर पर आगे अर्थिक तस्वीर को देखें तो भारत को 2023 से रोजगार, रुपए की मुद्रा भंडार, देश पर आर घाटा, चिंताजनक सूक्ष्मकांक जैसी आर्थिक में मिली हैं। बीते वर्ष त मानव विकास दखाई दिया है। संयुक्त रूप (यूएनडीपी) के व विकास सूचकांक नूची में भारत 132वें रहा गया। रिपोर्ट के प्रत्याशा, स्वास्थ्य व तियां भारत के समक्ष में प्रति व्यक्ति आय भरत की स्थिति 129वें हुई है। बीते वर्ष में मुश्किलें लगभग वर्ष जराइल-हमास युद्ध, तेल उत्पादक देशों के द्वारा तेल उत्पादन में द्वारा उत्पादन में कमी और महाराष्ट्र ने आम सरकार के लिए भी खास तौर से नवंबर 2023 वार फिर थोक एवं खुदरा भवित्व बढ़ने लगा। खाद्य मध्याह की दर बढ़कर 8.7 फीसदी से अधिक पहुंच गई। यदि हम देश में 2023 के रोजगार परिदृश्य को देखें तो पाते हैं कि रोजगार की स्थिति संसद की बहस से लेकर युवाओं की चिंता का कारण बनी रही। वर्ष 2023 में वैश्विक सुस्ती के कारण जो उद्योग-करोबार प्रातिकूल रूप से प्रभावित हुए, वहां रोजगार के कम मौके निर्मित हुए। लेकिन गिर अर्थव्यवस्था और असंगठित सेक्टर में मौके बढ़ने से बेरोजगारी दर जो 2017-18 में छह फीसदी थी, वह 2022-23 में घटकर 3.2 फीसदी रही। जहां वर्ष 2023 में आईटी बाजार की रोजगार तस्वीर बदल गई और बड़ी संख्या में कर्मचारियों को नौकरी छोड़नी पड़ी तथा नई नियुक्ति का अनुपात भी घट गया, वहीं विमान और फार्मा जैसे सेक्टरों में कुशल पेशेवरों की मांग बढ़ी। यद्यपि भारत ने वर्ष 2023 में वैश्विक मंदी की चुनौतियों के बीच निर्यात बढ़ाने व आयात घटाने के अधिकतम प्रयास किए, लेकिन फिर भी बीते वर्ष में निर्यात तेजी से नहीं बढ़ पाए तथा विदेशी मुद्रा की अन्य साधनों से कमाई भी कम रही, इससे व्यापार घाटा बढ़ा। बीते वर्ष में रुपया वर्षभर लुढ़कता रहा, वर्ष 2023 में अमेरिका के केंद्रीय बैंक फेंडरल रिजर्व द्वारा मौद्रिक नीति को सख्त बनाए जाने से डॉलर के मुकाबले रुपया निचले स्तर पर लुढ़कर 84 के स्तर पर पहुंच गया। वर्ष 2023 के शुरुआती महीनों में देश के विदेशी मुद्रा भंडार में लगातार गिरावट आई। इस गिरावट का कारण नियात म कमा, आयात म वृद्धि व डॉलर की तुलना में रुपए को थामने के लिए रिजर्व बैंक के द्वारा आवश्यकता अनुरूप विदेशी मुद्रा कोष में सॉल डॉलर की बिक्री किया जाना भी निश्चित रूप से इन विभिन्न आई-चुनौतियों के बीच भी वर्ष 2023 भारतीय अर्थव्यवस्था ने कई मोर्चों वेहतर प्रस्तुतिकरण दिखाया है। भारत की कई अर्थिक उपलब्धियां भारत में खेड़ाकित हुई। कारोबार और वित्तीय परिदृश्य व्यापक तौर पर विस्तार को लेकर आशावादी रहा। विकासमूलक संकेत देते हुए मजबूत बैलेस शीट प्रस्तुत करता रहा। विनियम खनन, निर्माण तथा औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि हुई है। खास तौर पर मैन्यूफैक्चरिंग, कृषि, कंस्ट्रक्शन, सील इलेक्ट्रिक्सीटी, होटल, ट्रांसपोर्ट, ऑटोमोबाइल, फार्मा, केमिकल, प्रोसेसिंग और टेक्स्टाइल, ई-कॉमर्स, बैंकिंग, मार्केटिंग, डेटा एनालिसिस, सायबर सिक्योरिटी, आईटी, टर्मिनल, रिटेल ट्रेड आदि क्षेत्रों में रोजगार स्वरोजगार के मौके बढ़ते हुए दिखाई दे रही। कर राजस्व में सुधा हुआ। सेसेंस और निपटी नई ऊँचाइयों पर पहुंच बीते वर्ष में भारत दुनिया में सर्वांगी डिजिटल पेंट ट्रांजेक्शन वाले देशों रूप में खेड़ाकित हुआ है। यह महत्वपूर्ण है कि वर्ष 2023 में भारत रिजर्व बैंक (आरबीआई) द्वारा 2023 रुपए के नोट को चलन से बाहर बांटने के बाद बैंक जमा में भारी वृद्धि हुई।



राशफल

मेघः-पुरानी गलतियों से सीख लेते हुए कवि वर्तमान को सुधारें। परिवार के सुव्यवस्थित चलाने में आपका विशेष योगदान होगा। किसी संबंध को लेकर पूरे परिवार के विरोध

बृषभः मन प्रसन्न व उत्साहित रहेगा।

प्रियजनों का सानिध्य प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्य सार्थक होने का योग है। नौकरी का वातावरण सुखद होगा।

मन्थन:- आधक क्षत्र म आप कुछ न
योजनाओं को सार्थक करेंगे। कोइ
व्यक्तिगत संबंध परिवार में विवाद क
कारण बन सकता है।

कक्षः- पूर्वाग्रहवश मन में किसी प्रकार का शंका न पालें। गलतियों को स्वीकारते हाथ

सगे-संबंधों में क्षमायाचक बने और शांत भाव से अपने पापों का लाभी प्रशिद्ध ही रहे।

माव स अच्छे कायर द्वारा उसका प्राप्ति भा करा
सिंह:- मधुरवणी से संबंधों में प्रगाढ़त
 बढ़ेगी। जीविका क्षेत्र में लाभ के अच्छे
 अवसर प्राप्त होंगे। पारिवारिक दायित्वों के

समय से पूर्ति हेतु प्रयत्नशील होंगे। जीवन सार्थक के स्वास्य का ध्यान रखें।

कन्या:- मन ढेर सारे पूर्वाग्रहों से प्रभावित होगा। पुरानी बातों को भूलकर वर्तमान के साथ समझौता करें। मन पर नियंत्रणरख कर्तव्यनिष्ठ बने। जीवनसाथी से वैचारिक मतभेद संभव।

शकील अख्तर

का कांग्रेस के लिए 2023 बड़ी उम्मीदों से शुरू हुआ था। श्रीनगर में राहुल की सफल भारत जोड़े यात्रा का समापन हो रहा था। राहुल एक नई छवि के साथ स्थापित हो रहे थे। पिछ कर्नाटक की जीत ने उस छवि को और निखार दिया था। ईडिया गठबंधन हुआ। पटना, बंगलुरु, मुंबई तीन बैठकों में विपक्ष के महारथियों के बीच राहुल आए रहे। ममता बनर्जी जो उनकी सार्वजनिक आलोचना कर चुकी थीं। बंगलुरु में मंच से कह रही थीं हमारे फेवरेट राहुल। मार यह राजनीति है यहां छवियां जिस तेजी के साथ उभरती हैं वैसे ही कमज़ोर भी होती हैं। तीन राज्यों की जीती हुई बाजी को हारने के बाद राहुल पिछ सवालों के धेरे में आ गए। मुख्य सवाल यह है कि राहुल का स्थितियों पर नियंत्रण क्यों नहीं है? आकलन और पूर्वानुमान के मामले में उनकी टीम इतनी कमज़ोर क्यों है। मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान में क्षत्रियों को इतनी खुली छुट क्यों दे रखी थी? राहुल ने नागपुर में कहा कि भाजपा में तानाशही है। कांग्रेस में कार्यकर्ता की बात सुनी जाती है। ठीक है अगर सुनी जाती है तो नए साल से एक जनवरी 2024 से कांग्रेस मुख्यालय 24 अक्टूबर



अगर चार सो सॉटों के लगभग सॉट एजेंस्टर्मेंट हो गया तो इस साल होने वाला लोकसभा चुनाव दिलचस्प हो जाएगा। याद रखें कि अभी जिन तीन राज्यों में कांग्रेस हारी है वहाँ उसे चालीस परसेंट वोट मिले हैं। मतलब वोट कांग्रेस के पास या दूसरे राज्यों जैसे पश्चिम बंगाल के 2021 के विधानसभा चुनाव में ममता बनर्जी की टीएमसी को 48 प्रतिशत वोट मिले कम नहीं हैं। इसी तरह जित्तर प्रदेश को विधायिका के लिए सबसे मुरिकल बताया जा रहा है वहाँ 2022 विधानसभा में सपा को अकेले 32 प्रतिशत, बसपा को प्रतिशत से ज्यादा, कांग्रेस को ढाई प्रतिशत और आरएलडी को तीन प्रतिशत वोट मिले थे। मतलब लगभग पचास प्रतिशत। जबकि भाजपा को 42 प्रतिशत ही वोट मिले। अब इन 42 प्रतिशत की तुलना कांग्रेस के हाल में हार वाले तीन राज्यों से करें। जहाँ 40 प्रतिशत वोट लेकर वह हार गई और यहाँ यहीं में क्योंकि विधायिका आपस में लड़ रहा था तो भाजपा 42 प्रतिशत पर भी जीत गई।

क नहीं की। ऐसे ही दिल्ली से मर्ट्रिमंडल ने, विभाग बाटों। लेकिन कांग्रेस में आखिरी आखिरी तक गहलोत और अचिन लड़े रहे कांग्रेस कुछ नहीं कर पायी। अब जब राजस्थान में भाजपा के ए मर्ट्रिमंडल में गुर्जरों को एक केविनेट त्री तक नहीं मिला तो पायलट समर्थक नहीं हैं कि हमें तो गहलोत को हराना चाहा। हरा दिया। राजस्थान में जैसी टट्टवाजी हुई है वैसी कांग्रेस में कभी नहीं हुई। 2018 के चुनाव से पहले यह शुरू हो गई थी। और 2023 हारने के बाद भी यह खत्म नहीं हुई है। दोषी कौन? सरकार और सिफकांग्रेस नेतृत्व। दोनों को ठाकर करना था। मगर अब भी हीं किया। मतलब राजस्थान में पार्टी 84 मीं की चीज ही ही नहीं। जो हैं गहलोत और पायलट ही हैं? इन्दिरा गांधी ने इसी राजस्थान में मोहनलाल सुखाड़िया, रिदेव जोशी, शिवचरण माथुर जैसे दिग्गजों को हटाया और जगन्नाथ पहाड़िया, बरकत उल्लाह खान को मुख्यमंत्री बनाकर पार्टी की सर्वोच्चता का कड़ा सदेश दिया। गहलोत भूल गए कि उसी समय की उपज वे हैं। पहले इन्दिरा जी ने और पिछे राजीव गांधी ने उन्हें आगे बढ़ाया। ऐसे ही सचिन के पिता राजेश पायलट को। क्या राजेश पायलट का कोई राजनीति का बैकग्राउंड था? मगर उन्हें भी इन्दिरा और राजीव गांधी ने तमाम दिग्गजों नटवर सिंह, नवल किशोर शर्मा के सामने आगे बढ़ाया। राजनीति में पार्टी ही बड़ी होती है। राजस्थान में गहलोत और पायलट ने मध्य प्रदेश में कमलनाथ ने और छोटीसगढ़ में भूपेश बघेल और टीएस सिंह देव ने यह नहीं समझा और हरे। मगर सिरफ़ इन लोग पर दोष रखने से कुछ नहीं होगा। गलती तो पार्टी नेतृत्व की थी। इससे पहले और कई राज्य उत्तराखण्ड, पंजाब, हरियाणा कांग्रेस ऐसे ही हारे। मगर जब कांग्रेस वर्किंग कमेटी पार्टी सर्वोच्च ईकाई की मीटिंग होती है, समस्या की जड़ तक कोई नहीं पहचानता। और त्वरित इलाज के लिए राहत से बचता है। और यात्रा की मांग की जाती है। कभी पार्टी दू पार्टी बन की तरह प्रवास हुआ है? एक इनिंग दोबारा नहीं जा सकती। और पिछे जब इन्हीं ने यात्रा के बाद वह मध्यप्रदेश राजस्थान हार गए जहां यात्रा लंबे समय तक रही और कामयाब मानी गई। यह दूसरी यात्रा लोकसभा चुनाव विधान सभा में कितनी कामयाब होगी? आज सेवा साल शुरू हो गया। राहत के लिए कांग्रेस के लिए इस बार कोई कहना नहीं है कि-इक बिरहमन ने तैयार नहीं है कि-इक बिरहमन ने तैयार है कि यह साल अच्छा है! शासकीय नहीं है मगर बहुत चुनौतीपूर्ण है।

भीमाकोरे गांव शौर्य दिवस बहुजनों का इतिहास है: छविराम

ग्राम मछापुरा में आजाद समाज पार्टी भीम आर्मी के तत्वावादी में आयोजित हुआ शौर्य दिवस कार्यक्रम

कन्नौज, समृद्धि न्यूज़

जिले के ग्राम मकापुरा में आजाद समाज पार्टी भीम आर्मी के तत्वावादी में भीमाकोरे गांव शौर्य दिवस सभा का आयोजन किया गया। इस दौरान समाज के लोगों ने शौर्य दिवस के गोदाओं को नियन्त्रित किया। इस अवसर पर जनसभा को सम्बोधित करते हुए मण्डल उपाध्यक्ष छविराम जाटव ने कहा कि भीमाकोरे गांव बहुजनों की निशानी है और समाज को घोट के प्रति जागरूक किया। वहीं मण्डल उपाध्यक्ष हरिषंग गौतम ने सम्बोधित करते हुए कहा कि अपने बच्चों को शिक्षित अवश्य



करें। शिक्षा से ही आप समाज में सम्मान पा सकते हैं। भीम आर्मी जिला उपाध्यक्ष बीरु खेरे ने कहा कि जिला उपाध्यक्ष बीरु खेरे ने कहा कि आज जागरूक किया जा रहा है। आजाद समाज पार्टी के जिला उपाध्यक्ष प्रभात

पाठशाला खोलने का कार्य कर रही है। बच्चों को महारुपों के प्रति जागरूक किया जा रहा है। आजाद समाज पार्टी की खातिर भीमाकोरे गांव में भीम आर्मी गांव गांव के लोगों के बीच सहज सम्बन्ध बढ़ते रहे। इसके अलावा गांव के लोगों के बीच सहज सम्बन्ध बढ़ते रहे। इसके अलावा गांव के लोगों के बीच सहज सम्बन्ध बढ़ते रहे। इसके अलावा गांव के लोगों के बीच सहज सम्बन्ध बढ़ते रहे। इसके अलावा गांव के लोगों के बीच सहज सम्बन्ध बढ़ते रहे।



ला रही है उसमें दिवाड़ी मजदूर की कैसे लाखों का जुर्माना भर सकते हैं। इसके अलावा 10 साल की सज्जा

नव वर्ष पर कोतवाली में डेढ़ सैकड़ा निराश्रितों को बाटे कम्बल

कलापी (जालौन)। कोतवाली सभागार में नव वर्ष पर कम्बल वितरण कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें असहाय व निराश्रित लोगों को कम्बल एवं मिशन वितरित किया गया। सोमवार को उप जिलाधिकारी हेमंत पटेल, सीआईआरी की मौजूदगी में आयोजित कम्बल वितरण कार्यक्रम में लगभग डेढ़ सैकड़ा लोगों को कम्बल दिए गये। इस मैके पर एसीएम ने कहा कि गरीबों की मदद करना सभी का धर्म है जिसमें हर सक्षम व्यक्ति को भाग लेना चाहिए। उनके मुताबिक प्रशासन के द्वारा तो कम्बल वितरण का कार्यक्रम प्रतिविन चलाया जा रहा है लेकिन इसमें आम आदमी को भी धारीदारी करनी होगी वह अधिभान पूरा हो सकेगा। वहीं सीआरी और तस्सीलोदर शेर बहादुर सिंह ने भी लोगों को सदी से बचाव के लिए आगे आने की अपील की। इस मैके पर कोतवाली प्रभारी निरोशक कामता प्रसाद, निरोशक मुहम्मद अशफ़क के अलावा बड़ी संख्या में नार के समाजसेवी भी मौजूद रहे।

अयोध्या धाम से आये पूजित अक्षत घर-घर बाट रहे रामभक्त



जालौन (उर्दू)। नववर्ष के पहले महीने में श्रीराम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा होना है। जिसके लिए नगर में अयोध्या से आए अक्षत का वितरण शुरू हो गया है। सोमवार की सुबह अक्षत का वितरण चालकों ने लगभग डेढ़ सैकड़ा लोगों को अक्षत घर-घर बाट रहे। अक्षत का वितरण चालकों ने लगभग डेढ़ सैकड़ा लोगों को अक्षत घर-घर बाट रहे। अक्षत का वितरण चालकों ने लगभग डेढ़ सैकड़ा लोगों को अक्षत घर-घर बाट रहे। अक्षत का वितरण चालकों ने लगभग डेढ़ सैकड़ा लोगों को अक्षत घर-घर बाट रहे। अक्षत का वितरण चालकों ने लगभग डेढ़ सैकड़ा लोगों को अक्षत घर-घर बाट रहे।

अयोध्या धाम से आये पूजित अक्षत घर-घर बाट रहे रामभक्त



जालौन (उर्दू)। नववर्ष के पहले महीने में श्रीराम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा होना है। जिसके लिए नगर में अयोध्या से आए अक्षत का वितरण शुरू हो गया है। सोमवार की सुबह अक्षत का वितरण चालकों ने लगभग डेढ़ सैकड़ा लोगों को अक्षत घर-घर बाट रहे। अक्षत का वितरण चालकों ने लगभग डेढ़ सैकड़ा लोगों को अक्षत घर-घर बाट रहे। अक्षत का वितरण चालकों ने लगभग डेढ़ सैकड़ा लोगों को अक्षत घर-घर बाट रहे। अक्षत का वितरण चालकों ने लगभग डेढ़ सैकड़ा लोगों को अक्षत घर-घर बाट रहे। अक्षत का वितरण चालकों ने लगभग डेढ़ सैकड़ा लोगों को अक्षत घर-घर बाट रहे। अक्षत का वितरण चालकों ने लगभग डेढ़ सैकड़ा लोगों को अक्षत घर-घर बाट रहे।

प्रशिक्षण में आंगनवाड़ी कार्यक्रमों को दिए गए टिप्पणी



तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का हुआ समापन। गुरुस्थायांज, कन्नौज।

सोमवार को ब्लाक संसाधन केन्द्र सराय प्रयाग पर आंगनवाड़ी के 52 सप्ताह कैलेंडर गतिविधि आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का समापन किया गया। जिसमें खंड

शिक्षा अधिकारी रेस्मे चन्द्र चौधरी ने कार्यशाला के समापन पर प्रशिक्षण में सीखी बातों को बच्चों को सिखाने के निर्देश दिए। शिक्षण विधि को बेहतर बनाने के लिए देकर जागरूक किया।

तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर सन्दर्भदाता गोपालदत्त शर्मा, सर्दंभरता विकेक कुमार ने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नेति

ने मौजूद शिक्षकों को चहक, पहल, परिकलन, कलाकृति पुस्तक प्रदान की शक्ति वर्तने हेतु तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में उन्हें 52 सप्ताह की कार्यवायना के निर्देश दिए। इस दौरान जारेंद्र सिंह, कौशलन बेबी, रीता, सुमन, उज्ज्वल आदि मौजूद रहे।

2020 में प्री प्राइमरी शिक्षा का प्रावधान किया गया है जिसके लिए आंगनवाड़ी कार्यक्रमी के क्षमता संवर्धन हेतु तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में उन्हें 52 सप्ताह की कार्यवायना के निर्देश दिए। शिक्षण विधि को बेहतर बनाने के लिए देकर जागरूक किया।

तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर सन्दर्भदाता गोपालदत्त शर्मा, सर्दंभरता विकेक कुमार ने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नेति

ने मौजूद शिक्षकों को चहक, पहल, परिकलन, कलाकृति पुस्तक प्रदान की शक्ति वर्तने हेतु तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में उन्हें 52 सप्ताह की कार्यवायना के निर्देश दिए। इस दौरान जारेंद्र सिंह, कौशलन बेबी, रीता, सुमन, उज्ज्वल आदि मौजूद रहे।

2020 में प्री प्राइमरी शिक्षा का प्रावधान किया गया है जिसके लिए आंगनवाड़ी कार्यक्रमी के क्षमता संवर्धन हेतु तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में उन्हें 52 सप्ताह की कार्यवायना के निर्देश दिए। शिक्षण विधि को बेहतर बनाने के लिए देकर जागरूक किया।

तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर सन्दर्भदाता गोपालदत्त शर्मा, सर्दंभरता विकेक कुमार ने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नेति

ने मौजूद शिक्षकों को चहक, पहल, परिकलन, कलाकृति पुस्तक प्रदान की शक्ति वर्तने हेतु तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में उन्हें 52 सप्ताह की कार्यवायना के निर्देश दिए। इस दौरान जारेंद्र सिंह, कौशलन बेबी, रीता, सुमन, उज्ज्वल आदि मौजूद रहे।

2020 में प्री प्राइमरी शिक्षा का प्रावधान किया गया है जिसके लिए आंगनवाड़ी कार्यक्रमी के क्षमता संवर्धन हेतु तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में उन्हें 52 सप्ताह की कार्यवायना के निर्देश दिए। शिक्षण विधि को बेहतर बनाने के लिए देकर जागरूक किया।

तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर सन्दर्भदाता गोपालदत्त शर्मा, सर्दंभरता विकेक कुमार ने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नेति

ने मौजूद शिक्षकों को चहक, पहल, परिकलन, कलाकृति पुस्तक प्रदान की शक्ति वर्तने हेतु तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में उन्हें 52 सप्ताह की कार्यवायना के निर्देश दिए। इस दौरान जारेंद्र सिंह, कौशलन बेबी, रीता, सुमन, उज्ज्वल आदि मौजूद रहे।

2020 में प्री प्राइमरी शिक्षा का प्रावधान किया गया है जिसके लिए आंगनवाड़ी कार्यक्रमी के क्षमता संवर्धन हेतु तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में उन्हें 52 सप्ताह की कार्यवायना के निर्देश दिए। शिक्षण विधि को बेहतर बनाने के लिए देकर जागरूक किया।

तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर सन्दर्भदाता गोपालदत्त शर्मा, सर्दंभरता विकेक कुमार ने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नेति

ने मौजूद शिक्षकों को चहक, पहल, परिकलन, कलाकृति पुस्तक प्रदान की शक्ति वर्तने हेतु तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में उन्हें 52 सप्ताह की कार्यवायना के निर्देश दिए। इस दौरान जारेंद्र सिंह, कौशलन बेबी, रीता, सुमन, उज्ज्वल आदि मौजूद रहे।

2020 में प्री प्राइमरी शिक्षा का प्रावधान किया गया है जिसके लिए आंगनवाड़ी कार्यक्रमी के क्षमता संवर्धन हेतु तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में उन्हें 52 सप्ताह की कार्यवायना के निर्देश दिए। शिक्षण विधि को बेहतर बनाने के लिए देकर जागरूक किया।

